Departmental Profile

Department of History

इतिहास विभाग

स्थापना

हिन्दी महाविद्यालय स्थापना	वर्ष १९६१
इतिहास विभाग	१९६१

हमारे लक्ष्य

१. विद्यार्थियों की उन्नति।

२. विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास।

३. शिक्षण को रोजगार मूलक बनाना।

४. दक्षिण भारत में तथा अन्य में भारतीय प्रांतों संस्था को ख्याति मिले, इसके लिए हिन्दी माध्यम से इतिहास के ज्ञान का संग्रह करना।

५. इतिहास के अध्ययन द्वारा मानवता का विकास करना।

६. इतिहास अध्ययन के माध्यम से भारत की संस्कृति और सभ्यता के गौरवशाली इतिहास को जानना।

७. भारत एवं विश्व के इतिहास को हिन्दी माध्यम से संकलित करना एवं लेखन पर बल देना।

प्राध्यापकगण		कार्यकाल
श्रीमती अर्चना सिंह	प्राध्यापिका	१ वर्ष ४ माह

इतिहास विभाग का संक्षिप्त परिचय

- हिन्दी महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही वर्ष १९६१ में इतिहास विभागकी स्थापना हुई तथा स्नातक स्तर पर इसे कला संकाय के साथ संयोजित किया गया।

- उद्देश्य :

- १. उन्नत ज्ञान के प्रसार के लिए उचित निर्देशन, शोध तथा विस्तार की सुविधाओं द्वारा इतिहास विषय के संवर्धन में योगदान देना।

- २. शैक्षिक कार्यक्रमों मे राष्ट्रीय एकीकरण पाठ्यक्रम, मानविकी सामाजिक विज्ञान तथा विज्ञान संबंधी ज्ञान को शामिल करना।

- ३. नवाचार शिक्षण अधिगम को बढ़ावा देना अंतर अनुशासनात्मक अध्ययन और अनुसंधा प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए उचित उपाय करना।

- ४. समग्र विकास एवं संवर्धन के लिए जन समूह को शिक्षित और प्रशिक्षित करना तथा इतिहास के विविध क्षेत्रों से संबंधित ज्ञान का संरक्षण और अनुसंधान करना।

- ५. छात्रों में स्वतंत्र चिंतन, समस्या, समाधान की आदत विकसित करना।

- ६. इतिहास संबंधी वर्तमान समस्याओं, मुद्दों एवं चतुनौतियों की पहचान कर छात्रों का ध्यान उस पर केंद्रित करना।

परिणाम (आउटकम) :

- कार्यक्रम का परिणाम (प्रोग्राम आउट कम)
- प्राचीन भारतीय इतिहास, दर्शन, राजनीति और साहित्य की मजबूत अवधारणा विकसित करना।
- छात्र स्नातक के बी.एड का प्रशिक्षण प्राप्त करके शिक्षण कार्य का चुनाव कर सकते हैं।
- स्नातक अपने आजिविका के विकल्प के रूप में संग्रहालय निरीक्षक, इतिहासकार, पर्यटन तथा इतिहास विशेषज्ञ आदि का चयन कर सकते हैं।
- स्नातक छात्र सरकारी सेवाओं जैसे संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी),टीएसपीएससी, भारतीय रेलवे बोर्ड आदि द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने के योग हो जाएँगे।
- छात्र अतीत के तथ्यों घटनाओं और आँकडों के आधार पर ज्ञान प्राप्त करके बहुविषयक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं।
- इतिहास अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों को बौद्धिक मंच में शामिल करना।
- छात्र राष्ट्रीय एकता के भावना का विकास कर, समुदाय की सम्प्रदायिकता और जातिवाद की समस्या का समाधान कर सकेंगे

पाठ्यक्रम का परिणाम :

- १. भारतीय इतिहास के अध्ययन से देश के बारे में संपूर्ण ज्ञान मिल जाता है।
- २. साम्राज्यवादी इतिहास के अध्ययन द्वारा भारत की सभ्यता और संस्कृति के उदय, विकास और प्रसार के पीछे कारकों एवं शक्तियों की समझ विकसित होती है।
- ३. इतिहास का अध्ययन राजनीति, दर्शन, साहित्य, कला, धर्म, विज्ञान और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय के योगदान को समझने में मदद करता हैं।
- ४. भारत के इतिहास उसके क्षेत्र एवं अन्य विषयों से संबंध का अध्ययन कर इतिहास के महत्व एवं विस्तार का ज्ञान प्राप्त होगा।
- ५. मुगलकालीन इतिहास विकास स्थापत्य कला, प्रशासन आदि की जानकारी प्राप्त करके उसका प्रयोग वर्तमान परिस्थितियों में कर सकेंगे।
- ६. विश्व इतिहास के अध्ययन के द्वारा छात्र वैश्विक संदर्भ में शासन धर्म, प्रमुख घटनाओं, विश्व युद्धों के कार्य कारण एवं परिणाम को जान सकेंगे।
- ७. तेलंगाना इतिहास के अध्ययन द्वारा दक्षिण के प्रमुख राज्यों उसके शासक एवं शासना पद्धति की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ८. तेलंगाना की संस्कृति तेलंगाना के गठन संस्कृति एवं आसफजाही शासन के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ९. छात्र विश्व, भारत, तेलंगाना, तथा प्राचीन इतिहास एवं उससे संबंधित विशेषताओं आदि का ज्ञान प्राप्त कर जीवन में उसका प्रयोग करेंगे।

- १०. रानी की उद्घोषणा रिपन और लिटन की नीतियों, अंग्रेजों के प्रशासन, भारत स्वंतंत्रता आंदोलन इत्यादि की जानकारी प्राप्त करके वर्तमान संदर्भ में उनका प्रयोग करें।

पाठ्यक्रम का प्रस्ताव (कोर्सेस ऑफर्ड)

बी.ए.,एम.ए. एम.फिल, पी.एच डी. आदि।

वर्तमान संकाय सदस्य

नाम	योग्यता	पद	विशेषज्ञता	अनुभव
डॉ. शैलबाला	एम.ए.पी.एचडी	प्राचार्य एवं विभागध्यक्ष हिन्दी महाविद्यालय	इतिहास	
श्रीमती यात्री बुच	एम.ए.	असिस्टेंट प्रोफेसर	इतिहास	
श्रीमती प्रियंका शर्मा	एम.ए. एमफिल	असिस्टेंट प्रोफेसर	इतिहास	
श्रीमती अर्चना सिंह	एम.ए., बी.एड.	असिस्टेट प्रोफेसर	इतिहास	

छात्र केंद्रित गतिविधियाँ

- छात्र सेमिनार और असाइनमेंट
- छात्र परियोजनाएँ
- अध्ययन भ्रमण (शैक्षणिक भ्रमण)
- समूह चर्चा

छात्र-सहायता और प्रगति

१. छात्रों की पिछले वर्ष के प्रश्नपत्रों के सेट प्रदान किए जाते है।

२. हमारे पूर्व छात्र सदस्य विभिन्न संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य कर रहे हैं और कुछ सवरोजगार में लगे हुए हैं।

३. छात्रों को सभी विषयों से संबंधित पुस्तकालय की किताबें दी जाती हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया में सहायक होती हैं।

४. छात्रों को विद्वत सामग्री के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय और सूचना सेवा अवसंरचना (एन.सूची) तक पहुँचने की सुविधा प्रदान की जाती है।

५. छात्रों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

६. छात्रों में व्यवहारिक कुशलता, सप्रेषणात्मक कौशल संघ विश्लेषण की क्षमता विकसित की जाती है।

७. छात्रों को रियायती बस पास और ट्रेन पास की सुविधा प्रदान की जाती है।

विभाग की भावी योजनाएँ

- स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षाएँ चलाना।
- राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करना
- अतिथि व्याख्यान के लिए प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित करना।
- अधिक संख्या में अतिथि व्याख्यान का आयोजन करना।
- अध्ययन यात्रा

छात्रों की संख्या

बी.ए.	प्रथम वर्ष	-	०५
बी.ए.	द्वितीय वर्ष	-	०६
बी.ए.	तृतीय वर्ष	–	०९

परीक्षा परिणाम :

	उत्तीर्ण प्रतिशत	कक्षोन्नत
स्नातक प्रथम वर्ष	६६.६७ प्रतिशत	३३.४३ प्रतिशत
स्नातक द्वितीय वर्ष	३७.५ प्रतिशत	६२.५ प्रतिशत
स्नातक तृतीय वर्ष	१०० प्रतिशत	---

परीक्षा परिणाम इतिहास

	उत्तीर्ण प्रतिशत
स्नातक प्रथम वर्ष	१०० प्रतिशत
स्नातक द्वितीय वर्ष	१०० प्रतिशत
स्नातक तृतीय वर्ष	१०० प्रतिशत

अव्वल आने वाले छात्र

बी.ए. तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक			
१०९२१९२५७०९	१. परवेज आलम	८.९५	प्रथम स्थान
१०९२१९२५९७०४	२. दोन्तुलवार सविता	८.९३	द्वितीय स्थान
१०९२१९२५९७०८	३. पारुल रानी कश्यप	८.९२	तृतीय स्थान

शिक्षण विधि :मूर्त से अमूर्त की ओर

१. छात्रों को किसी भी अध्याय या विषय संबंधित शीर्षक की जानकारी देते समय उनके पूर्व ज्ञान की चर्चा करते हुए उन्हें नए ज्ञान तक पहुँचाना।

२. व्याख्यान पद्धति द्वारा छात्रों को पाठ समझाना।

३. आगमन-निगमन, संश्लेषण-विश्लेषण एवं उदाहरण विधि का आवश्यकतानुसार प्रयोग करके पाठ को सरल एवं रुचिकर बनाना।

४. समय-समय पर छात्रों की पाठ से संबंधित परीक्षा लेना।

५. छात्रों को परियोजना कार्य देना।

६. छात्रों को विषय संबंधी शीर्षक देकर समूह चर्चा करवाना।

७. छात्रों में विश्व एवं भारत के इतिहास के अध्ययन द्वारा शासन, प्रशासन, अर्थ व्यवस्था संस्कृतिक एवं कला को वर्तमान के संदर्भ में प्रस्तुत करके समस्याओं के निदान के बारे में बताना।

विभागीय गतिविधियाँ

१. इतिहास विभाग के स्थापना दिवस से लेकर आज तक इतिहास विभाग निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है।

२. विभाग द्वारा छात्रों का सेमिनार करवाया गया।

३. विभाग द्वारा छात्रों को शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श दिया गया।

४. इतिहास विभाग की प्राध्यापिका द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रपत्र-प्रस्तुत किया गया।

५. इतिहास विभाग द्वारा स्नातक के छात्रों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया गया।

६. अतिथि व्याख्यान करवाया गया।

प्रतियोगिताएँ एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

१. छात्रों द्वारा समसामायिक घटनाओं पर चर्चा करवायी जाती है।

२. इतिहास के विभिन्न विषयों को लेकर प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता करवायी जाती है एवं छात्रों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

३. अंतर महाविद्यालयीन प्रतियोगिता में छात्र सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

४. महाविद्यालय में सृजनात्मकता एवं संज्ञात्मक विकास के लिए ऐतिहासिक संदर्भों एवं विषयों के अनुसार लिखित विचार प्रस्तुत करवाया जाता है। इस कार्य हेतु आवश्यक सुझाव एवं निर्देश भी दिए जाते हैं।

शैक्षिक गतिविधियाँ

१.प्रत्येक शनिवार को विविध विषयों पर परिचर्चा की जाती है।

२.छात्रों को पाठ्यकम से संबंधित परियोजना कार्य दिया जाता है।

३.छात्रों को विश्व, भारत एवं तेलंगाना के शासन, अर्थव्यवस्था, संस्कृति की जानकारी के माध्यम से राष्ट्र के विकास में सहयोग देने की योग्यताएँ विकसित करना।

४. वर्तमान घटनाओं या समस्याओं का पूर्व आधार पर समाधान निकालने का प्रयत्न करना।

विभागीय प्राध्यापकों की शैक्षणेत्तर गतिविधियाँ :

१. नाम – श्रीमती अर्चना सिंह (विभागाध्यक्ष)

इतिहास प्रवक्ता

शैक्षणिक अनुभव

१.जुलाई २००० से जून २००७ तक ग्रामीण शिक्षा निकेतन हाई स्कूल बरडीहा, डोभी, जौनपुर उत्तर-प्रदेश में इतिहास अध्यापक के रूप में कार्य किया।

२. जुलाई २००९ से जून २०१० तक ग्रामीण शिक्षा निकेतन हाईस्कूल बरडीहा, डोभी, जौनपुर उत्तर-प्रदेश में इतिहास अध्यापक के रूप में कार्य किया।

३. अगस्त २०१० से जुलाई २०१४ तक प्रवक्ता हिन्दी पंडित शिक्षण प्रशिक्षण कॉलेज हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

४. अगस्त २०१४ से जून २०२१ तक मथुरा सिंह इंटर कॉलेज में कोइलारी डोभी, जौनपुर उत्तर- प्रदेश में पीजीटी इतिहास लेक्चरर के रूप में कार्य किया।

५. सितंबर २०२१ से अब हिन्दी महाविद्यालय में इतिहास विभाग में सक्रिय रूप से कार्यरत हूँ।

शैक्षिक योग्यता :

१. स्कूली शिक्षा माध्यामिक शिक्षा उत्तर- प्रदेश बोर्ड इलाहाबाद से संपन्न हुई।

२. स्नातक एस.जी.आर.पीजी कॉलेज डोभी जौनपुर उत्तर- प्रदेश

३. स्नातकोत्तर एस.जी.आर.पी.जी. कॉलेज डोभी जौनपुर उत्तर- प्रदेश वी.बी. एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय।

४. हिन्दी विद्वान हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद।

५. बी.एड. दक्षिण भारत हिन्दी भारत हिन्दी प्रचार सभा खैरताबाद

अन्य कौशल और गैर शैक्षिक उपलब्धियाँ:

१.कॉलेज स्तरीय प्रतियोगिता में स्पोर्ट चैम्पियन अवार्ड उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल बोरा से प्राप्त किया।

२. स्नातक के समय एन.एस.एस. प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

विभागीय दुर्बलताएँ

छात्रों की संख्या में कमी के कारण निम्नवत हैं-

१. दक्षिण भारत में हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या कम है।

२. दक्षिण भारत में हिन्दी माध्यम से पढ़ने वालों छात्रों को रोजगार के

अवसर कम है।

३. हिन्दी माध्यम के छात्रों को रोजगार के बारे में जानकारी कम है।

४. हिन्दी माध्यम अधिकतर छात्र अन्य हिन्दी प्रदेशों से आते हैं,

जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं। अत: वे कार्य करते हुए पत्राचार

माध्यम से पढ़ते है।

उपचारात्मक कक्षाएँ

१. जो छात्र धीमी से गति से सीखते हैं अथवा उनकी बुद्धिलब्धि कम है उनके लिए

मनोवैज्ञानिक निर्देशन एरां परामर्श की व्यवस्था हिन्दी महाविद्यालय में की जाती है।

२. छात्रों को लक्ष्य निर्धारण एवं उसे प्राप्त करने हेतु उचित मार्गदर्शन अध्यापकों द्वारा

दिया जाता है।

३. जिन विषयों को छात्र आसानी से नहीं समझ पाते हैं। उनके लिए अलग से कक्षाएँ

चलाई जाती हैं।

४. छात्रों के व्यक्तित्व विकास संबंधी विविध आयामों पर उपचारात्मक शिक्षा की

व्यवस्था इस संस्था में उपलब्ध है।

५. छात्रों को वैयक्तिक स्तर पर प्रोत्साहित एवं उनकी समस्याओं का समाधान किया

जाता है।

६. सामाजिक समस्याओं जैसे समायोजन या अंतर्द्वद्व के शिकार छात्रों का शैक्षणिक

उपचार किया जाता है।

हिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय

१. हिन्दी महाविद्यालय के पुस्तकालय में पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध है एवं छात्रों को नियमानुसार दी जाती है।

२. छात्रों की विषयेत्तर रुचियों से संबंधित पुस्तकें भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

३. पुस्तकालय में वाचनालय की व्यवस्था है। जिसमें विविध प्रकार की पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र उपलब्ध है।

४. छात्र अधिक से अधिक संख्या में पुस्तकालय में रखी पुस्तकें उपयोग करते हैं।

५. छात्र पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य ज्ञान विज्ञान पुस्तकों का अध्ययन कर ज्ञान का संवर्धन करते हैं।

इतिहास विभाग की भावी योजनाएँ

१. विश्वस्तर पर हिन्दी माध्यम से इतिहास लेखन पर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना।

२. परास्नातक स्तर पर कक्षाएँ प्रारंभ करना।

३. आधुनिक तकनीकी द्वारा शिक्षण कार्य करना।

४ इतिहास की पुस्तकों का लेखन एवं प्रकाशन करना।

५. कार्यशालाओं का आयोजन करना।

६. राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करना।

७. प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवुं सामग्री चयन हेतु आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को प्रोत्साहित करना।

प्रतिज्ञा

१. हिन्दी महाविद्यालय को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की संस्था बनने में सहयोग देना।

२. हिन्दी विषय को रोचक एवं व्यावहारिक स्तर पर उपयोगी बनाना।

३. विश्व और भारत के इतिहास के जानकारी द्वारा वर्तमान समस्याओं का समाधान करना तथा भावी योजनाओं का निर्माण करना।

४. हिन्दी माध्यम से इतिहास की पुस्तकों के निर्माण में पूर्ण सहयोग देना।